अमरावती-स्मृति-ग्रंथ-माला ६

अमरुक शतक

(ब्रजी में पद्यानुवाद)

साहित्य वाचस्पति

डॉ० किशोरी लाल गुप्त

एम० ए० (हिन्दी, अँग्रेजी), पी-एच० डी०, डी० लिट्०

अभिनव प्रकाशन

सुधवै; भदोही ● मोंठ, झाँसी

अमरुक शतक

❋

साहित्य वाचस्पति
डॉ० किशोरी लाल गुप्त
एम० ए० (हिन्दी, अँग्रेजी), पी-एच० डी०, डी० लिट्०

❋

अभिनव प्रकाशन
सुधर्म, मवोही • मोंठ, झाँसी

प्रकाशक

अभिनव प्रकाशन

(१) सुथवँ, भदोही

(२) मोठ, झाँसी

प्रथम संस्करण . ११००

होली म० २०५२

(२५ मार्च १९९६)

वितरक .

जय भारती प्रकाशन

मालजी मार्केट, माया प्रेस रोड

२५०/३६५ मुट्ठीगंज

इलाहाबाद—३

मूल्य : दस रुपया मात्र

मुद्रक . एकेडमी प्रेस

दारागंज प्रयाग

अमरावती-स्मृति-ग्रंथ-माला-२
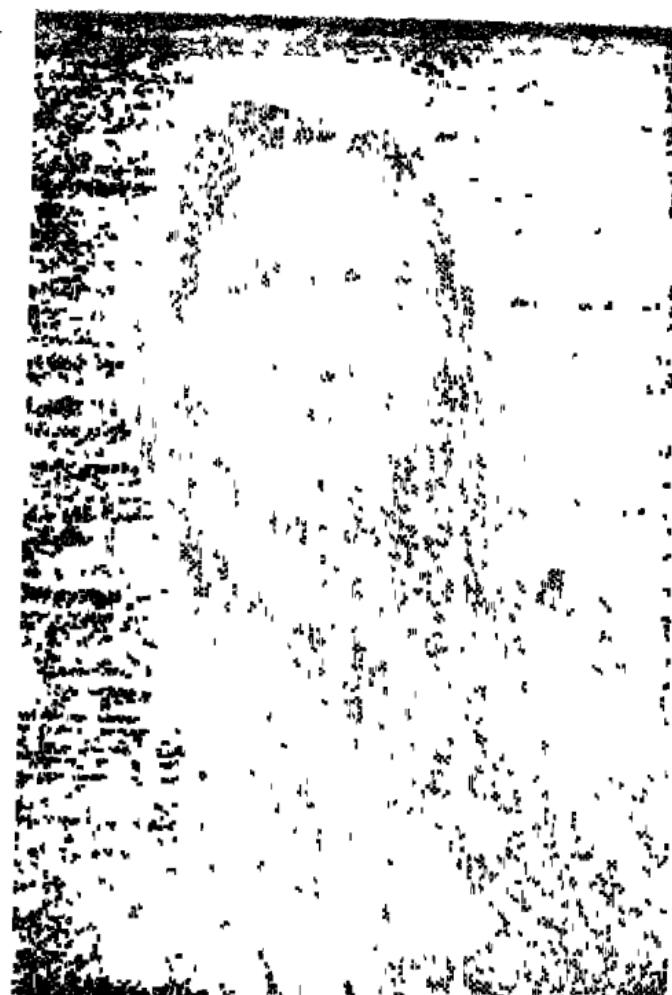
देवी मेरी पत्नी, प्रिया, सखा, सचिव, सहायक, प्रेरक, शक्ति
गत १२ जून ६५ को निशीथ मे बारह बजे वे ६३ वर्ष का
कर ७६ वर्ष की पूर्ण वय में भरापूरा परिवार परित्याग कर
। मै उनकी स्मृति में अपने ललित ग्रंथो का प्रकाशन इस
ा प्रारंभ कर रहा हूँ। उनकी आत्मा को इससे कुछ शांति
ह हमारे परिवार को भी उनकी स्नेह-स्मृति बनी रहेगी, मुझे
।

किशोरी लाल गुप्त

प्राक्कथन

तासी के अनुसार जगद्गुरू शंकराचार्य ने अमरुक शतक की रचना की थी और इन्होने हिन्दी मे भी कुछ रचा था। इस अतथ्य की जाँच पड़ताल के संबध में मुझे अमरुक शतक के पारायण का अवसर मिला और मैं इस पर इतना मुग्ध हुआ कि मैंने इसका ब्रजभाषा के कवित्त सवैयो मे अनुवाद ही कर डाला। अनुबाद का वह कार्य ७ सितम्बर ५६ से १४ नवबर ५६ तक पूरा हो गया था।

मैंने हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान बदरीनाथ भट्ट के भाई आगरा निवासी ऋणोश्वरनाथ भट्ट द्वारा सटीक सपादित और स० १९७१ मे वेंकटेश्वर प्रेस बंबई से प्रकाशित अमरुक शतक का उपयोग किया था। पद्यानुवाद करने के पहले मैंने प० विजय शकर मिश्र से हर श्लोक का अक्षरशः गद्यानुवाद कराकर पूर्ण अर्थ ग्रहण कर लिया था। ये पद्यानुवाद जैसे-जैसे होते जाते थे, हरिऔध कला भवन, आजमगढ के महामंत्री श्री विजय नारायण सिंह की सांध्य गोष्ठी में सुनाए जाते थे।

अमरुक शतक के मदनीय पद्यानुवाद का प्रकाशन मार्च १९९५ में संस्कृत अकादमी उत्तर प्रदेश के छह हजार रुपयो के अनुदान से जय भारती प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा हुआ। उसमे ४८ पृष्ठो की भूमिका, तदनतर एक-एक कर मूल श्लोक, उनके विजय शकर मिश्र कृत गद्यानुवाद, फिर मेरे पद्यानुवाद है। ग्रथ नव फर्मो का है। प्रकाशन के पूर्व १०-१९ फरवरी ९४ को अन्त के तेरह श्लोको का भी पद्यानुवाद कर दिया गया था। इन्हे ऋषीश्वर नाथ जी ने परिशिष्ट मे डाल दिया था और मैंने पहले उनके द्वारा स्वीकृत केवल १०० श्लोको का ही अनुवाद किया था।

अब अमरुक शतक के केवल पद्यानुवाद का यह सस्करण विशेष योजना के अंतर्गत अलग से प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमे न तो विस्तृत भूमिका है, न मूल श्लोक, न उनके गद्यानुवाद। इस सस्करण मे हर छन्द का शीर्षक लगा दिया गया है, यह इसकी विशिष्टता है।

साहित्य वाचस्पति

सुधबे, भदोही — डॉ० किशोरीलाल गुप्त

१४-४-९६ — एम०ए०(हिन्दी, अंग्रेजी), पी-एच०डी०,डी० लिट्०

अमरुक शतक

मंगलाचरण

१. जगदंब के मंजु कटाक्ष

कानन लौं धनु सिंजिनि तानत, हाथन पै नख-अंसु परै
फूलन के कनफूल से लागत, बिंब सरोरुह रूप धरै
तापर स्याम कटाछ परै, जनु लोभि के भौंर की भीर अरै
मंजु कटाछ सोई जगदंब के, या जग मैं नव पीर हरै

२. शंकर जी की शराग्नि

कर में लगे ते करै झटकि तुरत दूरि,
सारी मे लगे ते दूरि करै है प्रहार सो
लट लगे मीजि देत, पग लगे खींचि लेत,
अगन लगे ते झारि देत फटकार सो
कंज-नैन आंसु भरे त्रिपुर-बधूटी जेहि
दोषी पीउ मम दूरि राखै दुतकार सो
विकट अपार, अघ भार को प्रहार तव
शंकर को सर-अग्नि करै पल छार सो

३. सुरतांत प्रिया-मुख-छवि

सोभित चंचल कुंडल सों, जिहि पै लसै केस घनो सटकारो
स्वेद के बुंदनि सों जो भरो, स्रम भाल पुँछी तिलकावलि धारो
जो मुख है विपरीत समै सुरतांत मे आरस लोचन वारो
का विधना हरि औ हर, सोई रहै चिरकाल लौं तो रखवारो

४ रस रंग भरे विलोचन

आरसवंत, भरे रस-रंग सों, अर्द्धनिमीलित, बारंहिबार
लाज सो चंचल, सोहै रहैं छपि, है अनिमेष निहारनहार
गूढ़ भरे अनुराग के भावन को प्रगटावन मे जु उदार
को सुकृती अवलोकिहौ जाहि सो ऐसे विलोचन सो कुमारि

५ रोवन दीजिए

प्यार दयो अपनो तुमनैं, चिरकाल लो लाड लडायो लला
भाग्य की बात लखो अपराध कै नूतन, है अब याहि छला
दुस्सह सोक या, बोध की बातन, सात कहूँ कहो ह्वै है भला ?
कै करुना खुलि रोवन दीजिए, या दुखिया सरला अबला

६. मानिनि मानं मुंच

देखत नीचे कों, लेखत भूमिहिं, बाहर बैठि के प्रानपियारो
भूखी सखी जन रोवत-रोवत लोचन फूलि भयो रतनारो
भूलि गयो पढ़िबो हँसिबो सब, पींजरे मे सुक दीन बिचारो
और दसा यह तेरी स्वय, कठिने, हठ छाडि, करै न बिगारो

७. मीठी बातो से प्रीतम को मोल ले लो

रोके न रुकति पर-रमनी, रमन तेरो
रसे-रसे रस-रसरी सो गहि खैंचि लेत
काहे दुख करति हो, कातर ह्वै ररति हो,
भीति मन-चाही मति करो व्यर्थ, चितै चेत
पीतम तिहारो कमनीय, कात, केलि-प्रिय.
सरस-हृदय, युवा, सुपमा सो ताहि हेत
मीठी-मीठी सत बतियानि-पगहानि घेरि,
कम नाहि पीतमै पियारे सखि मोलि लेत

८. फूलों की मार

कोप करि कोमल औ लोल बाहु-लतन के
पासन सों कसि करि, पीउ को जकरि कै
देखत सखी जन के, केलि के निकेतन मैं,
साँझ समै होत ही गई लै तिया धरि कै
पीउहिं जताइ दोष, 'फेरि ऐसो करिहौ का ?'
बोली तुतराय मृदु भरि के, भभरि कै
दोषहिं छिपावन को हँसे जात, धन्य पिया,
रोइ-रोइ प्रिया हनै फूल हाथ भरि कै

९. अश्रु-अवरोध

सौ दिन दूरि बिदेस अहै, प्रिय जान चहै, तिय चाहै बराइबौ
चारि घरी महँ, दोपहरी महँ, सेपहरी या कि साँझ लौं आइबौ
पूछ्यौ भरे गर सों भभराय के, पीतम देख्यौ प्रिया थहराइबौ
आँसुन के जल सौं परिपूरित, बोन न रोक्यो बिदेस को जाइबो

१०. स्व-मरणोत्साह

"जात जो बिदेस, सो का मिलत कबौं ना फेरि ?
सुन्दरी, न सोच करौ, मेरे लियैं मन मैं
तुम खरी दूबरी हौ," कहतहि आँखै भरी,
पुलकित रोम भए, कंप भयो तन मैं
लाज सों गई ह्वै थिर पूतरी प्रिया की दोऊ,
बहि चले पूर, आँसू भरे द्वै दृगन मैं
बोली नहीं बाला कछू, उत्तर मे, लखि मोहिं,
उतसाह हास सों जतायो स्व-मरन मैं

११. वियोगी पथिक का करुण-क्रंदन

अधिक राति गए, झरी लाय कै, घोर घनो बदरा घहरायो
सो सुनि सोचि वियोगिनि वालहिँ, आँखिन में अँसुवा भरि लायो
आहि कराहि पथी भरे कंठन, कैसेहु रोवत रैनि बिहायो
ता दिन तै उहि गाँउ के लोगन, काहू पथी नहिं फेरि टिकायो

१२. निलज्ज मन

झूठहि मान मैं रूसि कह्यौ, चलौ दूरि हटौ, न करौ लँगराई,
सो सुनि दूरि कठोर गयो चलि, छोड़ि सुकोमल सेज सुहाई
या विधि प्रेम को त्यागि ततच्छन, जाने करी छन मैं निठुराई
री, मन मेरो निलज्ज महा, करौ काह, है जात तऊ उतै धाई

१३. शुकावरोध

रंग-विहार समैं सुख-भौन मैं, बातै करी कल जो सुखदाई
होत प्रभात ही सो कहिवे गुरु लोगन सों, सुक चोंच उठाई
सो सुनतै बहू लाज सों लाल ह्वै, कान के लाल उतारि कै धाई
दै सुक चोंच मैं, दाडिम के मिस, बांध्यो गिरा, करि दाइ उपाई

१४. कहाँ लाल, कहाँ काला

ही अनजान खड़ी मुँह फेरि के, क्यों दुखिया मोहिँ अंक लगायो
आपने भागि के चीन्हन की करिकै दया या, कहौ काह है पायो
सौति के साथ कियो रति जो, अँगराग सो लाल हियो पुँछि आयो
स्नेह-सनी अलकावलि छ्वै, सोइ देखहु साँवरो अंक उगायो

१५ नागरी का यह आदर या मान ?

आसन सों उठि दूर गई झटि, पास पिया को न नेकु बिठायो
पान लियावन को छल कै, गहि गाढ़ अलिंगन को टरकायो
नाह की नाहीं सुनी, औ बुलाय के सेवक पासहिं काम लगायो
या विधि आदर के मिस नागरी मानिनि पूरन मान निभायो

१६ ज्येष्ठा-कनिष्ठा

एकई आसन देखि प्रिया दोऊ, पीतम पीछे सो है छिपि आयो
एक के नैनन मूँदि कै, नैन-मिहीचिनि खेल को ख्याल बनायो
प्रीति प्रफुल्लित दूसरी के लखि लोल कपोल, लला ललचायो
टेढ़ो गरो करि, चूम्यो छली, पुलकाकुल भावती के मन भायो

१७ अनुतप्ता

पाउँ पर्यो पिय, दूरि कर्यो तिय, सो मन माहिं बिषाद हो छायो
'भारी छली सठ' यों कहि रोष सो, और हू ताहि कठोर बनायो
पीउ गयो, लखि, ऊँची उसास लै, पीन पयोधर पै कर ठायो
आँसु के पूरन सों परिपूरन, दीठि सखीजन ओर उठायो

१८ माई री, सोवन देत न है मोहिं

क्यों कसि बाँधि के मारिहिं किंकिनि, सोवति भोरे बिलोचनवारी
धीरे से पास बुलाय के दासिहिं, पूछ्यो हरै हरि, बात कहा री
माई री, सोवन देत न है मोहिं, बोली पिया करिकै गरो भारी
रोष बहाने करौट लै, पीउ को स्थान दयो, गयो सोय बिहारी

१९. मान-मोचन

एकई सेज पै सोए दोऊ, मुँह फेरिके, मौन, बिषाद भरे
दोऊ लिए है मनावन भाव, पै राखत नान को मान, अरे
दोऊ लख्यौ कनखीनि, दुहूनि के नैन है नैन सो जाय लरे
हर्ष सों दोऊ हँसे बिहँसे, छुटि मान गयो, दोऊ लागे गरे

२०. धीर-बहावन आँसू

देखनो का करती हमसो, इहि सोचि कै हौं थिरता कछु ठायो
या सठ काहे न बोलत है ?' इमि सोचि तिया, मन रोष बढायो
सूने, सके, लजे, दोउन के दृग, औसर ऐसो विचित्र उपायो
हौं हँसि बोल्यो दसा लखि वा, तिया धीर-बहावन आँसु बहायो

२१ मान मलीन भयो सहसा

छीन भए उपचार सबै, पग पै परिबोई रह्यो इक चारो
मान मलीन भयो सहसा, मुख-चद हथेलिन ऊपर धारो
लै पलकानि थमे, कुच ऊपर आनि गिरे, अँसुआनि सहारो
मानिवती ने जनायो मया'करि, मो पै अनुग्रह आपनो भारो

२२ दोष-गोपन की अनूठी रीति

और के पीन- उरोज-रगे-अंगराग, लगे पुँछि के तुव छाती
मो पग लागन के मिस यो, क्यो छिपावत जात हो सौति-संघाती
या कहते तिय के, 'है कहाँ ?' कहि, पोछन की करी रीति सुहाती
गाढ अलिगन मे कस्यो, मानिनि, भूलि गई सुख के मद माती

२३. कै कै सबै टलाटली

कचुकिकू बिना कान्ति मनोहर, धारति भोरे विलोचनवारी
या कहि चोली की गाठि छुई, जो बंधी कसि पीठ पै, रग-विहारी
सेज समीप तिया अधरान लखी हँसी, नैनन मोह बिभा री
देखि सुखी सखियाँ अँखियाँ, बड़ी बेर भई कहि के टरी सारी

२४ मान-निर्बाह की कठिनाई

भौंहन टेढी करौ हौं कितो, अँखियाँ नही मानै, लखै ललचाई
या चित जेतो कठोर करौ, तन होत रोमाचित तेतो सदाई
रोकत जीभिहिं बोलन सो, पै जरे मुँह पै स्मिति जात है आई
पीउ के सौंहन होत, या मान को कैसे निबाहनो होइगो माई

२५. जलांजलि

"आँखिहिं मूँदि बिताओ कछू दिन," 'हो सुभ, आप पयान करीजै
सूनो न ह्वै है दिसा, पहिलै इन आँखिन मूँदिहो, ध्यान धरीजै"
"आ ही गया, समझौ अरी बावरी, "मीत को भागि—उदै सुख दीजै"
'आपनो मायो सदेसो कहो पिय तीय मे मेरी जलाजलि कीजै

२६. रोदनं अबला-बलं

का करिबो न सिखायो सखी, पहिलै अपराध करै जब प्यारी
याही सों अगन मोरि न जानत, कैसेक व्यंग के बैन उचारी
आँसु भरे दृग-कंजन सो, बस रोइबो एक रह्यौ उपचारौ
स्वच्छ कपोलन पै अँसुवा गिरे, भीगी लटै सटी पाइ पुचारी

२७ उराहनौ

जाहु जू, जाहु जू, जानि गई सब, व्यर्थ न बातै बनाओ कन्हैया
दोष तिहारो न यामे कछू, विधना ही विरोधी भयो या समा
गाढो तिहारी जो प्रेम रह्यौ इतनो, जु पै वाकी दसा भई है या
तौ मम चचल प्रान के जाने, बिथा तुम्हे कौन-सी होइगी दैया

२८. अभिसारिका

छातिन हार बिराजत ज्योतित, उज्ज्वल औ बडे मोतिनवारो
पीन नितंबन किंकिनि सोर करै, पग नूपर को झनकारो
जाति चली पिउ सो मिलिबे हित, सुदरि ऐसे बजाइ नगारो
तौ अधिकै भय कंप सो आकुल, चारिहु ओर कहौ क्यों निहारो

२९. अनुशोचिता

"रोज भिनसारे आवौ, (हमै व्यर्थ कलपावौ)
आँखिन उनिद्र रोग दयो उपजाय है
गौरव हमारौ हरयो, हमै अति लघु करयौ,
(जाहु जू हमारे सुत-सूरज सहाय है)"
"कहा मोहिं मूढ़ ने कियो है कहौ," "रमन जू,
बस तुम दई सब बुद्धि बिसराय है
सौहे रहिबे मैं मम घने दुख पावौ, जाहु,
सुनि लैहौ (चैन सो), जो पथ्य हम खायहैं

३०. असंगति

बाला वह, बात नहीं फूटति हमारे मुँह,
नारी सुकुमारी वह, कातर है भारी हम
पीन, उठे, तुंग, भरे, भारी, भरकम, जुग—
धारे है पयोधर वा, थके है अनारी हम

बने अधनन भार लबी वा कुमोदरी है,
अममर्थ चलिबे मे बने है अगारी हम
दोष दो बिराजत है और के बदन माहिँ
बात या अपूरब है, दोप अधिकारी हम

३१. प्राण भी साथ क्यो नही जाते

बीठ के प्यारे सखा कर कक्न, धीरे गए, बहि आँसु पनारे
धीरजऊ छन एक रह्यौ नहिं, या चित आगे चल्यो मन भारे
जैसे पिया परदेस-पयान को कीन्ह्यो विचार, चले सँग सारे
जानो तिहारो सुनिश्चित है, फेरि साथ न देत क्यो प्रान हमारे

३२. मधुर अमृत

मानिनी के पल्लव-अधर काटि दाँतन सो,
आइके के अचित्य, तिया चाकल बनावै जो
हाथ को हिलाय, सठ, नही, नही, छोड मुझे,
कोप सो कहति बामै भुज गहि लावै जो
भ्रू लता कँपाती, सी-सी करति सुलोचना के,
अरुन अधर चूमि-चूमि अठिलावै जो
व्यर्थ देव-गन मिलि सागर अपार मथ्यो,
अमृत मधुर, मेरी जान कृती पावै सो

३३. लज्जाहरण

"सोय गयो पिय, सोवहु जाय सखी तुमहू, अँखियाँ अलसानी"
यो कहि सारी टरी सखियाँ, पिय को मुख देखिके हौ ललचानी
वा मुख पै मुख जाय धरयों, सो रोमांचित भो. छल देखि लजानी
कै उपचार सबै समयोचित, मोऊ हरयो प्रिय, एक न मानी

३४ हौ खल छाँड़त ना निठुराई

कोप हो भौहन की कुटिलाइहिं, मौन ही मैं रही राजि रुखाई
सधि रही मुसकानि, चितौनि मे पूरे प्रसादन की तरलाई
कैसे बिकार भयो उहि प्रेम मे, आजु लखौ यह नौबति आई
लोटत हौ तुम पाँव परे सब, हौ खल छाँडति ना निठुराई

३५. अँसुआन के पूर

"छोडहु कोप या, देखहु हो नत तो पद पद्म मे, हे सुकुमारी
और कबौं नहिं कोप करयौ अस, जैसो करयौ अब, प्रानपियारी"
पीउ कै यौ कहतै लख्यौ बंकिम, अर्द्ध-निमीलित नैन उघारी
बोली तऊ नहीं, आँखिन सों, अँसुआन के पूर चले बहि भारी

३६. कैधौं है विलीन भई

कसे ले प्रगाढ परिरंभण में छोटे भए,
कुचनि रोमाच छए, दबी छवि भारी सो,
घने स्नेह रस अतिरेक सो खिसकि गई,
ललित नितंबन सो सारी सुखकारी सो
मत, मत, मत, मत, मुझे मत, मुझे मत,
कहति अधूरे बैन, भरी सिसकारी सो
सो गई, कै मरि गई, कैधो मन लीन भई,
कैधौं है विलीन भई प्रिया सुकुमारी सो

३७. लाज के मारे नई दुलही

सासी छुएँ प्रिय के बनिता ह्वै बिनीत बड़ी, सिर नीचे झुकावै
चाहै पिया कसिबो भुज मे हठि, अग समेटि तिया हटि जावै
बोलि सकै न नवेली कछू, मुसुकाति सखी-तन दीठि उठावै
लाज के मारे नई दुलही, पहिले परिहास समै दुख पावै

३८ बीते दिनान की बातनि सोचि

स्नेह को बंधन छूटि गयो, सनमानहू प्रेम को खूटि गयो
दूरि गयो सदभाव सबै, न रह्यो चित चाव, अदाब छयो
आवत आज पिया मम सौहन, जैसे न चीन्हत, कोऊ बियो
बीते दिनान की बातन सोचि, न फाटत क्यों सखि मेरो हियो

३९. विरहोपरांत मिलन की बतरस

जे चिरकाल रहैं बिरही, दुख के दिन दीरघ काटि बितावैं
जे रति साहन मो श्लथा अंग बने, रति की रजनी केहूँ पावैं
जैसैं सब जग जादू सों दूसरो, यों मन, मानि प्रमोद मनावैं
जेती बढावैं कथा वे युवा जन तेती नहीं रति-केलि बढ़ावैं

४. अंगन ही सब मंगल ठायो

नील सरोरुह सो नहीं, दीठि सो दीरघ बंदनवार बनायो
कुंद चमेली के फूल नहीं, मुसकान-प्रसूनन को बगरायो
कुंभ भरे जल मों नहीं, अर्घ्य दियो कुच-कुंभन स्वेद चुचायो
आवत पीय के तीय ने, आपने आगन ही सब मगल ठायो

४१. छैल छकायो

सौंहै न ऐबे की सौह धराइ दई, तऊ दोषी सखी बनि आयो
विभ्रम सों लिपटी प्रिय सो, मिलिबे की उमंग हों ताहि बतायो
'बावरी संभव है नहि या,' कहिके हँसि बेगि सो कठ लगायो
छैल छबीले छली ने अली, रजनीमुख आवत मोहि छकायो

४२. मानऊ मोहिँ मनोहर लागत

हौं कहूँ जाय गिरौं नही पाँवन, या डग है पट सो पद ढाँपत
रोकत है बल कै अधरान हँसी, नहीं ऊपर ताकत, काँपत
मो सो कछू नही बोलति बाल है, बोलौं तो जाइ सखी सों अलापत
प्रेम प्रगाढ़ की बात कहा, मोहि मानऊ याको मनोहर लागत

४३ सनेह का सहज सुन्दर ढंग

दोषी पिया सन जो कहिबे हित, बैन अलीक अलीन सिखायो
पीउ के सामुहे जाय कै बेग सों, पाठ रटो—सो सोई दुहरायो
ऐसा कछू रही काम की प्रेरणा, फेरि सोई ढंग आपुही ठायो
भोरे सनेह को या सहजै अरु सुन्दर ढंग, न कोऊ पढ़ायो

४४. बाला-नैन

दूर रहे उत्सुक हों, आए पर सकुचित,
बोल-चाल बेला मे बनै ये प्रसरित गति
परिरंभ-काल मे हैं लाल ततकाल होत,
बसन गहे पे बंक भौंह सों कुपित पति
पाँयन पै परिबे के समै में बनै ए साश्रु
(झलकत रहत सदैव अनुमति रति)
भारी परपंची कैसे बनि जात बाला-नैन,
पीउ अपराध करै जब, अचरज अति

४५ मानिनी के आँसू

"काहे को सूखि गए सब अंग हैं ? काहे को काँपत है तन तेरो ?
काहे को पीरे कपोल परे,? कस रूखे विलोचन मो तन हेर्यो"?
पीय के पूछतैं तीय कह्यो, 'सहजै सब या,' कहि कै मुँह फेर्यौ
खींचि निसास, चितै अनतै, छलके अँसुवान की बूंद बिखेर्यो

४६. दैव की विचित्र गति

मुखिया तिया के आगे मुँह से निकरि गयो
भूल सों, प्रमाद-बस, परकीया-प्रिया-नाम
चकित ह्वै, नीचे मुँह करि लयो, लाज बस,
दईमारो लाग्यो खुरचन नख तेहि ठाम
दैव की विचित्र गति लखौ बिन रेखन सौं
एक छवि एक रूप बनि गयो अभिराम
ध्यान सों जो देखौं तो तरुनि सोई ठाढ़ी हँसै
जाके नाम-मात्र सों भई ही तिया गति वाम

४७ हित अनहित पसु-पछिउ जाना

झूठी बतियान के पत्यान सो भयो जो भ्रम,
छोड़ो ताहि, कठिन करो न मृदु चित है
चुगुल लबाइन की बातन के फेर परि,
हौं तो तव दास, दुख दीबो अनुचित है
और जो हिये में निज मानि लयो सत्य याहि,
तब तौ हमैं न कछु कहिबो उचित है
जामे तुम्हें मिलै सुख, सोई करौ प्रान प्यारी
जानति भले हो, कहा हित अनहित है

४८. पावसागम

उभरी मग-धूरि कौ भूरि दबावत, कोमल अंकुर कौं हुलसावत
कु-प्रभंजन-भंजन सो बने छानिन छेदन मे घुसि पंथ बनावत
गृह काज लगी गृहिणी जन के, कुच-मंडल-स्वेद के बूंद सुखावत
पावस आवत ही, बुनियाँ बरसैं, कदली-दल कौ हरखावत

४६. चारु-चंद्रिका में मान-मोचन

मदथ के पालन मे प्रतिबिंबित, मन्जु मयंक (मरीचिन वारौ)
ताहि अँचै गई मानिनियाँ मधु-साथ सबै (कला सोरस वारी)
अंतर पैठि विनाम करयो, तेहि चद नै, मान-घनौ-अँधियारौ
मानिनि मान-विहीन भई, मब (फैलि गयो मधु हास उजारौ)

५० वर्षा-बिरहशंकिता

भरि कै अँखियाँ अंमुवा, नभ ओर लख्यो, घनी घेरि रही घनमाला
'बालम जाहुगे जो परदेस को, आधी कह्यौ करि कैहूँ कसाला
छोर गहे पटुका के मेरे, धरती नख से रही लेखती बाला
पाछे करयो जौ कछ दयिता, सो कह्यो न परै (परयो जीह पै ताला)

५१. तरुनी प्रानप्रिया

दीरघ वक्र बिलोल बिलोकनि, अजन-रंजित लोचन-वारी
गोरे, गरूरी, भरे, उभरे, निखरे खरे, पीन-पयोधर-वारी
भारी नितंब के भार मो मालस, जो पग मंद उठावन-वारी
या तरुनी मम प्रानप्रिया, नित जीवन-मोद बढावनवारी

५२. मनोज के दास

जावक-रंजित, नूतन पल्लव से मृदु मंजुल औ अरुनारे
नूपुर के रव सो परिपूरित, जो मदनालस से मतवारे
प्रेम 'पराध के कारन जो जन, जात है पाँवन सों अस मारे
जानि कै आपने दास मनोज, स-प्रीति सकारत ते जन सारे,

५३. न रही प्रिया रोवति यातै

'वल्लभे', 'नाथ', 'तजौ इहि रोष कौं,' 'रोष सो का बिगरो है तिहारौ'
'खेद भयो मोहिं,' 'है अपराध तिहारो नही, अपराध हमारौ'
'तौ कत रोवति कंठ भरे इमि,' 'रोवति हौ केहि आगे, बिचारौ'
'मेरे', 'तिहारी हौं कौन, 'प्रिया,' न रही प्रिया रोवति यातै, न चारौ

५४. हेउँत-बयार

तुहिन सों सरस पराग कन कुदन को
सुरभित अति अलि सुखद अपार है

ताहि लै उठाय ऊँचै, दसहू दिसान माहिँ,
गेरत बखेरत है, अतिसै उदार है
टकराइ उछरत भोरी हिरनाछिन कैं
कुंकुम सो रँगे कुच-कलस सुढार है
'सी सी' करैं बाल, चूमि तिनको बिहाल करि
अंगन कँपाइ, वहै हेउंत बयार है

५५ आँसू बूँदे रही छहराय

सुनि अधराति नव घन की गरज घोर,
सिथिल सरीर ह्वै अधीर गिरी धरा जाय
दुखित अलीगन है, आय कै भई सहाय,
हाथन लगाय तयो तुरतै उठाय काय
पीतम पयान-काल चौंधि जो दई ही बाल,
करि मीठी बातैं सोचि-सोचि रोवै करि हाय
आँखिनि सो गिरि-गिरि, कठिन कुचन परि,
उछरि-उछरि आँसू बूँदे रही छहराय

५६. जब से प्रिया प्यारे के प्रेम पगी

'मूढ़ता मेरी, लगे पिया के गरे, हौं हूँ न क्यों बढ़ि कंठ लगी ?
चूमतैं क्यो न लख्यौ, न कह्यौ कछु, नीचे किए मुँह ठाढ़ी ठगी ?
'आई वह बनिकै तुरतै तब, क्यो न रँगीले के रंग रँगी ?'
सोचति औ पछताति मनैं, जब सो प्रिया प्यारे के प्रेम पगी

५७. मानिनी की अभिलाषा

नाम सुने जेहिको, सब अंगन है पुलकावलि होति घनी
आनन-इंदु लखे जेहिको, यह देह द्रवै जिमि चंद्रमनी
सो निठुरा उर मान को सोच छोडावन, सोचति यो रमनी
आवहिंगे कब कंठ लगावन, पाँवन पास ह्वै ठाढे धनी

५८. प्रात बसंत बयार

कामिनि के मुख-चंद छए, मधु-स्वेद की बूँदनि सों सरस्यो करैं
लोल लटैं लहराइ चलै, सु-नितंब के अंबर को धरष्यो करै
नीरज के रज सो भरि कै, मधु-गंध के भारन सो हरष्यो करै
प्रात बसंत बयारि हरैं-हरैं, श्रांति सबै रति की करष्यो करै

५९. रमनी को औरऊ बनावै रमनीय

चदन मो मडित (ह्वै पीन पुष्ट) पीरे अंग,
पल्लव-मृदुल पान-रजित अधर लाल
धार मैं फुहारन की धुलि कै निरंजन ह्वै
(खंजन से चपल) बिलोचन बने बिसाल
अंग-अंग लिपटो महीन सिक्त अंबर औ
फूलन सँवारो, भारो गीलो गधवारो बाल
रमनी कौ औरऊ बनावै रमनीय, मिलि
ग्रीषम की भीषम तिजहरी मे विकराल

६०. सुंदर और असुंदर दिन औ रातै

है दिन सुंदर, राति नहीं, पिउ को मुख मजुल देखि जुडैए
राति ही सुदर है, दिन नाहिन, सेज पै पीतम प्यारे सुलैए
जा दिन-रातिहि पीउ मिलै, दोऊ सुंदर, प्यारे भले सुख पैए
जा दिन राति पिय न मिलै, सौ असुदर जानहु, दोऊ नसैए

६१. परदेस प्रयाण के समय प्रिया का सकल्प

लोल लोचननि वारि भरि, मीठी सौहै खाय,
पाँवन पै परि, रोइ, करि मनुहारी जू
सो तौ कोऊ और ही कृपिन अबला विचारी,
प्रान-लोभ, हाहा खाइ, गिरै है पछारी जू
हौं तौ बडी पुण्यवती, जाहु जू, सुमंगल हो,
प्रात को पयान तुव, रसिकबिहारी जू
आपने सनेह हित मोको जो उचित अहै
करिहौं मैं सोइ, सुनि लीजियो अगारी जू

६२. अश्रु-नदी का प्रवाह

घोर घनी घनमाल घिरी, दिन कारो परो, सठ चाहत जान है
पीत पटोर प्रिया न गह्यौ, नहिं द्वार पै दीन्ह्यो भुजान-विधान है
पाँवन पै भहराय गिरी नहिं, जाहु न कत कह्यो बतिया न है
केवल अश्रु-नदी के प्रवाहन, रोक्यो तिया पिया दूरि पयान है,

६३. सर्वांङ्ग नेत्रता एवं कर्णता

आवत पीय जबै सखि सामुहें, और सुनावत प्यार की बात है
जात है भूलि सबै सिख सो, मन मान को पावत एक न घात है
वा अँग-अँग के देखन कों, मम अंग सबै बनि लोचन जात हैं
कै रस-बातन के सुनिबे हित, वै सब कानन माहिँ समात हैं

६४. बताओ कोऊ तदबीर है ?

विरह विषम काम, बाम बनि करै छाम—
सकल सरीर, नेकु लावत न पीर है
जीवन के दिन गनिबे मे है चतुर कूर
यमराज बीर नेकु होत ना अधीर है
मान-व्याधि सो ग्रसित तुमहू भए हो नाथ,
अबला अनाथ कहो कैसे धरै धीर है
किसलय दल सी मृदुल बाल है बिहाल
कैसे कै बचै, बताओ कोऊ तदबीर है

६५. आँसू के पूर जो न रुके, न बहे

पाँव परयो रह्यो देर लौं पीउ, तऊ प्रतिकूलता कैसी तिहारी ?
कौन करयो अपराध, रह्यो थित जो सनमारग पै पिय, प्यारी ?
या विधि ताहि प्रबोध्यो अली जब, कोप को बेग थक्यो तब भारी
आँसु के पूर भरे भरपूर जो, सो न रुके, न बहे सहसारी

६६ निरंतर प्रवर्द्धमान अंतर

पहिलै अविभिन्न सरीर रहे, नहिँ दोउन मे कछु भेद रह्यो है
फेरि आप भए प्रिय, हौंहूँ प्रिया, हतभागिनी, यों कछु भेद परयो है
अब नाथ हैं आप, तिहारी कलत्र हौं, भेद दिनैंदिन जात बढ्यो है
प्रान हमारे जो बज्र कठोर है, ताको सबै यह लाह लह्यो है

६७. धीरे से बोलो, कहीं हृदय-स्थित पी सुन न ले

काहे गँवावति हो समयो सब, यो ही भुराई में भोरी लली
मान करो, धरौ धीरज नैकु, न पीतम सों या सिधाई भली
सुनतै सखि सों बतियाँ यह मान की, बोली डरी भय मान छली
धीरे से बोलहु, या उर मे थित पीय न ले सुन बात अली

६८. अधरान लुनाई

काम पिपासित ह्वै जब तें, तिय को अधरा-रस पान करयो है

प्यास बढी दुगुनी तब ते, बिन पीए न नैसुक जात रह्यो है

बाढ़ै घरी-घरी, मद न होत है, काह करौं, नही जात सह्यो है

यामे अचंभो न कोऊ अहै, अधरान लुनाई को बास रह्यो है

६९. सहचर पंचशर

'या अँधियारी निसा मे कहाँ चली जाति अकेली, कहो अलबेली !'

'जात जहाँ मम प्रान पियारो, लगी मिलिबे की हमै तलबेली'

'नैसुक लागै नहीं तुमकौं डर ? साथ सहाय न कोऊ सहेली ?

('काहे डरौं), सँग मेरे चलै, धनु सायक लै के मनोभव मेली'

७०. धूर्त प्रिय

काहू निधडक बनिता के दंत-छत देखि,

पिया रद-छद पर, मार्यो है कमल सो

आँखिन मे जाइ पर्यो कंज को पराग, मानो

याते आँखै मूँदि लीन्यों छैल छली छल सो

भोली, मुँह गोल करि, फूँक मारि-मारि रही,

रजहिँ निवारि ठाढी, भरे नैन जल सो

चूमि रह्यो धूर्त बार-बार चद्र-मुख चारु,

कंपित कामिनी गहि कल बल छल-सो

७१. रसरंग पगी मानिनी

चाहे हिया फटि जाय सखी, तन चाहे जितो करै छीन अनंग

प्रेम मे चचल पीउ सों काम न, मोहिँ कछ् नहिँ चाहत संग

मान के वेग मे जोर सो बोली प्रिया, (पै भयो तुरतै स्वर-भंग)

जोहन लागी पिया-मग कौं, मृग-लोचनी चारु पगी रस-रंग

७२. अवगुन भरो छैल

गाढ परिरंभन सो चदन हियो को छूटि,

गिर्यो, सेज सारी याते कडी, सुकुमारी है

सोवन के जोग नाहिँ, कहि राखि छाती पर,

दाँतन अधर दाबि, दयो पीर भारी है

पैर के अँगूठन को कटिया बनाय मंजु,
सारी खैंचि मोहि करी निपट उघारी है
अपने लिए जो योग्य, धूर्त तीने सोई कियो,
(भारी अवगुनन सो भरो छैल भारी है)

७३ सहनशीला विरहिणी

कबौं पिया तिया सौं है और को लियो है नाम,
पाइ फटकार कहूँ दूरि रह्यो बहु काल
काहू विधि फेरि आयो, फेरि करी भूल सोई,
बिरहिनि सुनी अनसुनी करी ततकाल
कहूँ असहनशील सखी सुनि पावै नहीं,
सोचि-सोचि डरि-डरि विकल भई बिहाल
आँखिन में नीर भरि, सूने घर फिरि-फिरि
भारी साँस लेति डरि, विरह कृसित बाल

७४. प्रिय-प्रतीक्षार्थिनी

देखत-देखत बीति गयो दिन, बाढ़न लाग्यो दिसान अँधेरो
पंथिन ते पथ हीन भयो, गई दीठि जहाँ लौं, लख्यौ बहुतेरो
आवत देखि न आपनो पीतम, सोक-सनी घर को डग फेर्यौ
आए न होइँ वे सोचि तुरंतहि, मोरि गरो, फिरि, ता दिसि हेर्यो

७५ क्रिया-विदग्धा

आयो पिया परदेस सौं, दयौसहि कैं कैं मनोरथ कैहूँ बितायो
सेवक-सेवकिनी सब मूढ़, जु लाँवी कथान को जाल बिछायो
काटि लियो मोहि काहू कुजंतु नैं, यों कहि आँचर नैकु हिलायो
या विधि सों रति-कातर चित्त सों, वा तरुनी घर दीप बुझायो

७६. तो अब काहे को रोवति हौ ?

प्रेम को का परिणाम, न सोच्यो, सखीजन हूँ को न आदर कीन्यो
बावरी, ह्वै कै सयान इती, कहू मान कियो, न भली बुरी चीन्ह्यो
आपने हाथन खैंचि अँगार को, कै निज पाँयन के तर लीन्यो
तो अब काहे कों रोवति हौ ? फल ठीक मनोभव देव जू दीन्यो

७७ पुनर्पुनचुंबिता

चूमो बर देखि, रच सेज से मयंकमुखी,
उठि, बडी बेर लौं, निहार्‌यो कियो पिया-मुख
सोयो जानि गाढी नीद, ह्वै कै निहचिंत चित,
चूमि लयो ताहि, मन माहि पाइ रति-सुख
चूमत ही पीय के कपोल रोम-रोम उठे,
देखि कै लजाइ गई, करि लयो नीचे रुख
नींद को बहानो छाँडि, हँसि रस रंग माहि,
बार-बार बडी बेर चूम्यो प्रिया, (गयो दुख)

७८ मान करूं तो कैसे ?

मन उतकंठा नाहिँ, स्तन न प्रकंपित भे,
रोम-रोम पुलकित भए ना सरीर के
भाल पर छाई नही, स्वेद कनी रचकऊ,
(सर नही एकौ चले पचसर बीर के)
मेरो मन हरि गयो, एते मान देखत ही,
प्रानधन प्यारे सो हरन उर धीर के
फेरि केहि भाँति, भलीभाँति समझायो गयो
मान धारो, मन या अचचल कै धीर धै

७९. प्रानन छोड़ि दयो दयिता

कातर नैनन देख्यो बिलब लौं, फेरि करी बिनती कर जोरी
फेरि पटोर को छोर धर्‌यो, पुनि गाढ अलिगन में गह्यो बोरी
एकऊ मानी नही सठ नै, हठि जान चह्यो सब सो मुँह मोरी
प्रानन छोडि दयो दयिता पहिलै, पुनि प्रान के बल्लभ को री

८०. कोपनशीला को सखी-शिक्षा

अँगुरी-नख-अग्र सो पोछि के आँसुनि, क्यो चुप रोवति, कोपनसीले
दुष्टन के उपदेस को मानि, कबौ करिहै गुरु मान हठीले
केतो मनाइहैं पीउ, न मानिहै, जैहै विरक्त ह्वै, मानि सही ले
फूटि के रोइहै ता समयो, (अबै नाहक नैन करै जनि गीले)

८१ विवशता

नीचे कियो मुख, आवत ही पिय के, नख ओर निगाह ठयो
पीय के बैनन के सुनिबे हित, आकुल कानन मूँदि लयो
कीन्ह्यो तिरस्कृत हाथन सो, पुलकावलि स्वेद कपोल छयो
आँगी की सीवनि टूटै नऊ सत बार, अली कहो काह भयो

८२. कोप छिपाय रही

दूरि ही सौ मुसकाय, सबै विधि स्वागत की, तुमने प्रतिपाली
जो कछु आज्ञा दई सो धरी सिर, ठाढ़ी रहीं नत-ग्रीव निराली
ऊतरऊ दयो, नैन मिलावन हू मैं न चूकी, कडे उर वाली
कोप छिपाय रही उर मैं, यह गोपन दाहत मो मन आली

८३. सुरति अभिलाषिणी कुपिता

एक ही सेज पै सोए दोऊ, कहूँ धोखे लयो पिय और ती नाम है
लेटि गई, मुँह फेरि, दै पीठि बौं, नेकु सुन्यो न, छयो तन ताम है
कोपि कियो अपमान, पिया चुप साधि रह्यो, लखि वाम को बाम है
जाइ न सोइ, यों सोचि तिया, गर मोरि ततच्छन ताक्यो ललाम है

८४. जो धेनु फेरि लावै, सोई धनंजय

आयो न कंत, बह्यो मलयानिल, हारि थक्यो ऋतुराज बिचारो
मल्लिका-मंजुल-गंध भरो, इहि ग्रीषमहू को चल्यो नहिँ चारो
हे मन, तो सों जो होय सकै, तौ उपाय कै तावहु निष्ठुर प्यारो
गो-धन फेरि जो लाइ सकै, है धनंजय सो, बिगरी का हमारो

८५. प्रमदा

मेरे उर माहिँ लखि अपनेई नखछत,
मधु के नसे में मत्त, मान्यौ काहू और को
डाह सो, बिचारे बिना, रूठि, उठि चली हठि,
'कहाँ जात' कहि धरयौ हँसि पट छोर को
फेरि मुँह, नैन भरि, फरकत अधरनि,
कहयौ, छोड़ो, हटौ, इहाँ काम न छिछोर को
भूलत भुलाए नाहिं बातै वै कटाछमई,
मन गहि रहयो उहि त्योर की मरोर को

८६. प्रिया-पाद-प्रहार

सुदर जो सरसीरुह सोन सो है अधिकै, हैं महावर भीने
कांति-मरीचिन-वारी मनीन सो, जो जडे नूपुर वारे नवीने
कोपि कै कज-दृगी ने सोई पद, पीतम-सीस चलाइ हैं दीने
सोभित सो तहँ भागि के चीन्ह से, (पीउ ने सादर है हँसि लीने)

८७. तुम्हें प्रिय प्रिय नहीं, क्रोध प्रिय है

पाइ कै घशनि करतल की तिहारे मंजु—
रचित कपोलनि की गिरी पत्र-रचना
मन को मधुर यह अमृत अधर-रस
गयो है उसासन सों पियो, रह्यो रस ना
बार-बार गले लगि, आँसू परि उरोजन
देत थरकाय है कँपाय, चलै बस ना
अनुनय विनय हमारी नही नेकु सुनौ,
क्रोध है पियारो तव' हम नहीं, बस ना

८८ खडिता

भाल मैं राजत खौर महावर, कठ बिराजत बाजू सुहाई
होठन काजर भ्राजत औ अँखियान बिलोल तमोल ललाई
देखि प्रभात पिया को सुरूप, प्रिया अँखियान छई अरुनाई
सूँघत ही कर-कज के, सांस सबै छिन मैं कर-कज समाई

८९. छनाछन

पीउ को मारग ताकत दीन ह्वै, ठाढी गली के सिरे, अभिलाष न
बेर बड़ी भई, कोऊ लखायो न, काँपि कराहि उठी, तिय ता खन
पीय-महा-बिरहागि-सिखा-तपे-गोरी के नैनन ते अँसुवा-कन
पीरे परे स्तन-मडलवारे हिया पै गिरे छनछन्न छनाछन

९० तिया रोकि राख्यो पिया

चिंता घोर मोह सो विकल अति कातर ह्वै
पिया मौन परयो प्रिया-पद पदुमन मैं
पाइ झिडकीन ह्वै बिमुख चल्यो चाह्यो जब,
बाल अति आकुल भइ है तब मन मैं

सरमाने, अलसाने, अँसुवाने नैनन सो
बालम बिलोक्यो बड़ी बेर उलझन मैं
धक-धक छतिया में, जीवन की आस धरि
तिया रोकि राख्यो पिया आपनो, सदन मैं

६१. आँसू और काम की आगि

बल कै अँखियाँ छलके अँसुवा, तिय रोकि रख्यौ समुहे गुरु लोगन
सो रस भीतर, दीन्हो भिगोय, जगी बिरहागि, लगी एक अगन
काम की आगि गई धुँकि, औ मुँह सों निकस्यो धुआँ धारे तरगन
श्वास-सुगंध सो व्याकुल, भौंर की भीर चली मँडराय उतै मनु

६२ गुरु मान की तैयारी

बहु बेर लौं भौहें चढ़ैबो सिख्यो, अँखियाँ बड़ी बेर लौं बंद कर्‌यो
बल कै अधरान की रोकी हँसी, करि जत्न घने मुँह मौन ठयो
अलि धीरज धारिबे कौ थिरता, केहूँ भाँति अधीर चितै है दयो
गुरु मान की सारी तयारी करी, जय-लाभ तो दैव अधीन रह्यो

६३. मंत्र-कीलित

जानत, है बन देस को अंतर, औ नद नार पहार को अंतर
लोचन-पंथ न ऐहै प्रिया, बहु कीने उपायऊ जंतर मंतर
ग्रीव उँचाय तऊ खरो पंजन के बल, पोछि के आँसू निरंतर
काहू के ध्यान पगो, तकिबो करै ता दिसि, है जनु कीलित मंतर

६४. करौ वापस मेरे सबै मधु-चुंबन

कंज-बिलोचने, कोप जु है उर माहिँ, सो राखियो ताहि अनंदन
है करनी अब और कहा तोहि, बोलो सबै तजि कै छल-छंदन
जो पहिलै तुम्हैं गाढ़ा दयो, अब फेरो मया कै सबै परिरंभन
राखहु आपने पास नहीं, करौ वापस मेरे सबै मधु-चुंबन

६५ मनोज महीपति का अभिषेक

मृगनैनी के मंजुल जंघ दोऊ, कदली पत-हीन से कैसे ठए
मध्य है वेदिका सो सुठि राजत, (नूपुर बाजत मंत्र जये)
पूरित पानिप से कुच द्वै, जनु हेम के कुंभ हैं सोभ रए
मानो मनोज महीपति के अभिषेक के साज सजे है नए

९६ चचले, तेरो कठोर हियो

अपनेई से आयो पिया घर कौं, बनि प्रेम सौ आर्द्र पर्‌यौ पग पै रे
चचले, तेरो कठोर हियो, नहिँ बोली कछू, न हँसी तन हेरे
जात रह्यौ सुख जीवन कौ सब, रोदन ही रह्यो भागि मे तेरे
दुष्ट या रोष है, ताकौ सहौ फल, क्यो न उठावौ ये दुःख घनेरे

९७. प्रवासी का विरह गीत

बारि के भार भरे बदरा-धुनि कौ सुनि कै, पथी है अकुलायो
आँखिन मे अँसुवा भरि कै, उतकठ वियोग के गीतहिं गायो
सो सुनि लोगनि मान दयो तजि, वेगिहि पीय प्रिया गर लायो
प्रान-प्रनासी-प्रवास की बात तो दूरि रही, चरचा न चलायो

९८. कामाग्नि के ईधन

फूलन हार है, स्निग्ध सुवास है, है जलजात के पातन के बन
है हिम के कन, मजु हिमासु की सीतल सुभ्र मरीचिन के गन
है घन, है घनसार घने, नव केसर, कुकुम, सीतल चदन
काम की आगि बुझे कहिए किमि, जाके जराइबे को अस ईधन

९९ काम-बहेलिया

तरुनी सरदर्तु की देवधुनी, जुग गोल कपोल लसे है किनारे
अजन-रजित-लोचन लोल है, खंजन है मन-रजन भारे
बेधन कौं धनु तानत भौह को, पापी अनंग-बहेलिया हा रे
बाँधन कौं इनकौ हनिकै, लखौ कान के पास है पास पसारे

१०० मुक्तों का रस-रंग

गोरे, गरूरी, भरे, उभरे कुच, अबर मे बिलसैं दुरिकै
लोटत हार हिये हिरनाछि के, वा स्तन-मडल पै लुरिकै
मुक्तन की है दसा जब या, रस लेन रमे-रसे यो ढुरिकै
काम के किंकर है हम तौ, रस लेहि न क्यौ फेरि यो बुरिकै

१०१. तिरछी चितवन और मान-भंग

पिय के विनतीहू किए न गयो, जो गयो न सखीनहू के समुझाए
सहि दीरघौ द्यौस कठोर महा, जो गयो न बियोग के ताप तपाए
सब तेइ भुलाइ, दियो बिलगाइ, परस्पर जो रहे गाल फुलाए
तिरछी अँखियाँ परतै मुँह पै, सोइ मान भज्यौ, मुरि द्वौ मुसकाए

१०२. राग के रंग रँग्यो उर या

कैसे करौं विसवास सखीन कौं, साजन पै खुद कैसेक जाऊँ
पी मन की सब जानत है, फिर कैसेक आँखिनि आँखि मिलाऊँ
लोग सबै चतुरै बहुतै, उपहास करैं, लखै भेद अगाऊ
राग के रंग रँग्यो उर या, अब माई री मैं केहिके ढिग जाऊँ

१०३. सहकार तरु तले सिसकती विरहिणी

आँगन की बगिया मे लगे, सहकार के सौरभ से मद-माती
गूँज रही मधुरी भ्रमरी-धुनि, आम की मजरी पै मँडराती
ताहि तले वा वियोगिनी आय दुकूल से अग-प्रत्यंग छिपाती
कामिनिया सिसकै, न फुटै धुनि, साँसन ही कुच-कंज कँपाती

१०४. मर्याद-रक्षा

बैठो तिया गुरु लोगनि मैं, पिउ और पियारी के पास ते आयो
सौ लखि मूँड़ हलाइ, नचाइ के भौंह, परोसिनि ओर लखायो
जोरि पिया कर ठाढो रह्यो, तिया लाल भई, पिया सीस झुकायो
दोउन ने मरजाद बचाइ, यों आपने भावन को दरसायो

१०५ आगतपतिका की प्रवर्द्धमान मुख-छवि

भयो म्लान, पीरो परो, दूबरो, दुखित दीन,
लंबे रूखे केस छए, स्लथ, मुख खीन दीन
आवतै हमारे परदेस से पियारी-मुख
सोई ततकाल भयो प्रमुदित रस-लीन
रति केलि-काल मे भयो है सोई रसमय,
आदर सो चूमि लयो ताहि, गहि, लवलीन
पायो पियो जो रस, सो कहत बनै न कछू,
याको बरनन कोऊ करिहै कहा प्रवीन

१०६ सुरतांत में सुखी रामा

कर-पल्लव सो, तन सो खसे वस्त्रन कों, सुरतात मे हेरती है
दीप-सिखा पै, बुझावन को, बिखरे हुए फूलन गेरती है
हँसती बनी विह्वला पीय-विलोचन, हाथन मूँदि के घेरती है
रति अत मे रामा पियै अपने, रस-रग सो रीझि कै हेरती है

१०७. आत्मद्रोहिनी न बनो

घर-घर युवती है, सुंदरी है, रमणी है
        याहो समै उनमें न्यो पूछ-पाँछ जा के पास
उनके जो प्रियतम, क्या है वो प्रणत यो ही,
        जैसो है प्रणत इन गजनी तिहारो दास
पिसुनो के सुनके प्रलाप तुम रूठ गईं,
        आत्मद्रोहिनी न बनो, पी सो न बनो उदास
एक बार स्नेह-धार जो पै कहूँ टूट जाय,
        फिर न पुरुष अनुगत हो के आवे पास

१०८. मान मे आखिर है गुन कौन

गरम उसासनि सो आनन जर कित,
        हृदय हमारो जर सो है उखरत जात
नीद नही आवै, प्रिय मुख नही दरसावै,
        रात दिन आँखिन सो अँसुवा ढुरत जात
सूखत है जात अग, पग पै परयौ हो पीउ,
        तब नही मानी बात, अब कसकत गात
बोलौ सखी, देख्यौ यामै कौन गुन भारी, जासो
        प्यारे सो कराय मान, हमैं र्खवौ दिन-रात

१०९. मानी मन को अभिशाप

आजु सो भूलि हूँ कै जो कबौ, मठ चित्त या मान की बात चलावैं
        तौ इतनोई कहौं मै सखी, सुख या पहँ नैकु कबौ नही आवै
प्रीतम के बिना रंग-रली निसि-सारदी मे ये कवौ न मचावै
        सावन की घन बीरन मे, कलपैं यह नित्य, नही कल पावै

११०. मानी मन और प्रिय मनमोहन

पिउ आयो, गिरचो मम पाँइन पै, सखियान सो मीठी कही बतियाँ
        जब वै सिगरी टरी, पीउ ने मोहि लगाइ लई कसिकै छतियाँ
फिरि चूम्यो गरो गहि बार अनेक, भयो मन चंचल या रतियाँ
        इत मान न छोड़ै तऊ मन या उत प्यारो पिया करौ का बतियाँ

१११. राग-रंग

कहनो है एकांत में तोसों कछू, कहिके पिउ ने मोहि है भरमायो
मैं हू सुचित्त ह्वै जाइके ता ढिग, बैठि गई, नहिं संभ्रम छायो
कान सौं लाइ के आनन कौं निज, बातैं बनाइ, मुँहैं मुँह नायो
बाने धरचो कसि जूरो मेरो, गसि होठन होठ हौंहूँ चुभलायो

११२ पिउ प्यारे की बाँकी गली

देखि कै नैनन प्रीति जगै मन, 'को है, 'कहाँ को है' जानन चाहत
देखत दूतिन के मुख को, अनुराग के राग सदा उर बाढत
परिरंभन को सुख तो बडी बात है दूरिहूँ सौ मन है, अवगाहत
पीउ पियारे की बाँकी गलीन, अवस के पास है घूमनो भावत

११३ सुरति-समोहिता

आवत ही लखि सेज पै साजन के, पडे नीवी के बधन ढीले
रसना-गुन मे फसी सारी भई श्लथ जाइ नितब सटी फरकीले
और न आगे की जानत हौं, किमि अंग सों अग लगे है रसीले
कौन मैं, कैसे भई रति पूरन, बेसुध ह्वै गई, सग रँगीले

डा० किशोरीलाल गुप्त की प्रका

१. अभिनव प्रकाशन, सुधवै, भदोही
   १. शपा—खडी बोली मे १५१ कवित्त सवैये
   २. श्यामा—८६ चतुर्दशपदियाँ
   ३. राधा—ब्रजभाषा में खंड काव्य
      द्वितीय सटीक संस्करण
   ४. अमरुक शतक—ब्रजी मे पद्यानुवाद
   ५. घटखर्पर काव्य— ,,
   ६. सोनजुही—ब्रजी का फुटकर काव्य
   ७. उराहनो—ब्रजभाषा में भ्रमर गीत
   ८. अमरावती स्मृति ग्रंथ
२. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
   ९-१० नागरीदास दो भाग
३. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
   ११. शिवसिंह सरोज (सपादन)
४. हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
   १२. सरोज सर्वेक्षण (शोधप्रबन्ध)
   १३. महाकवि सूर और सूरन दीन
५. साहित्यरत्न भंडार, आगरा
   १४. भारतेन्दु और उनके पूर्ववर्ती तथा परवर्ती कवि
६. साहित्य रत्नमाला कार्यालय, २० धर्मकूप, बनारस
   १५. प्रसाद का विकासात्मक अध्ययन
७. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी
   १६. भारतेन्दु और अन्य सहयोगी कवि
   १७ हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास
८ वाणी वितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी
   १८. गोसाई चरित
९. विद्या मंदिर, वाराणसी
   १९. भूषण, मतिराम तथा उनके अन्य भाई
१०. साहित्य सेवक कार्यालय, जालपा देवी, वाराणसी
   २०. बाल्मीकि आश्रम सीतामढी
११. कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी
   २१. सुन्दर विलास (सटीक, संत सुन्दरदास कृत)
१२. हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणसी
   २२. हरिऔध पद्यामृत

१३. भक्त कर्माबाई एजूकेशनल ट्रस्ट, वाराणसी
   २३. नूरजहाँ मीमांसा (समीक्षा) १९७७
   २४. कर्माबाई १९७९
१४. हरिऔध कला भवन, आजमगढ़
   २५. हरिऔध शती स्मारक ग्रंथ १९६६
१५. भक्त अभिनन्दन समिति, जमानियाँ
   २६. गुरुभक्त सिंह भक्त : व्यक्ति (अभिनंदन ग्रंथ) १९६८
१६. मधु प्रकाशन, २४ ताशकंद मार्ग, इलाहाबाद
   २७. सुजान शतक (घनानन्द के भारतेन्दु कृत संग्रह की टीका) १९७७
   २८. गिरिधर कविराय ग्रंथावली १९७७
१७. स्मृति प्रकाशन, शहराराबाग, इलाहाबाद
   २९. हजारा (एक प्राचीन काव्य संग्रह) १९७८
१८. किताब महल, इलाहाबाद
   ३०. तुलसी और और तुलसी १९८४
१९. विभू प्रकाशन, साहिबाबाद, गाजियाबाद
   ३१. हिन्दी साहित्य के इतिहासो का इतिहास १९७८
२०. भारती परिषद, प्रयाग
   ३२. सीताराम चतुर्वेदी अभिनदन ग्रथ (सम्पादन) १९६६
२१. जय भारती प्रकाशन, लालजी मार्केट, माया प्रेस मार्ग, इलाहाबाद
   ३३. अमरुक शतक (विशद भूमिका, मूल, गद्यानुवाद, अग्रेजी में पद्यानुवाद) १९६५

प्रमुख अप्रकाशित ग्रंथ

१ कृष्ण लीलात्मक के सूरसागर } प्रेस मे, हिन्दी प्रचारक
२. द्वादश स्कधात्मक सूरसागर } पुस्तकालय, वाराणसी
३. सतसईकार तुलसी ग्रंथावली—५० ग्रन्थ
४. प्राकृत पैंगलम् और उनके कर्ता हरिब्रह्म—प्रेम मे जय भारती; इला०
५. हिन्दी साहित्य के इतिहास के मूल स्रोतो का विश्लेषण (डी० लिट्० का शोध प्रबन्ध)
६. हिन्दी कवि और काव्य—(१८ भागो मे वृहत काव्य सग्रह और कवियों का शोधपूर्ण परिचय)
७. हिन्दी कविता का इतिहास—चार बडी जिल्दो में
८. हिन्दी के नामरासी कवि
९. प्राचीन हिन्दी काव्यो के उद्धारक सपादक
१०. सूरसागर का छदशास्त्रीय अध्ययन—प्रेस मे (संजय बुक सेंटर, वाराणसी)
११. कामायनी—अँगरेजी पद्यानुवाद ।

कवि-परिचय

नाम—डॉ० किशोरी लाल गुप्त।

जन्मस्थान और स्थायी पता—सुधवै, भदोही (उ० प्र०)।

जन्म काल—गंगा दशहरा सं० १९७३ (जून १९१६)।

शिक्षा—एम० ए० (अंग्रेजी, हिन्दी) पी-एच० डी०, डी० लिट्०

सेवा कार्य (१) अध्यक्ष हिन्दी विभाग, शिबली कालेज, आजमगढ़ जुलाई १९४८—जून १९६२

(२) प्राचार्य हिन्दू डिग्री कालेज जमनियाँ; गाजीपुर जुलाई १९६२-नवम्बर १९७५

सम्मान—(१) नवम्बर १९८२ को नेहरू कवि सम्मेलन आजमगढ़ द्वारा नागरिक अभिनन्दन।

(२) अभिनन्दन ग्रथ प्राप्ति, काशी, जून १९८९

(३) हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा साहित्य भूषण पुरस्कार, २५५०१ रु०, १४ सितम्बर १९९२

(४) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा साहित्य वाचस्पति की मानद उपाधि—१० अक्टूबर १९९२

(५) रचना—बत्तीस ग्रन्थ प्रकाशित, एक सौ अप्रकाशित। शोध, प्राचीन काव्य ग्रन्थों का संपादन, हिन्दी साहित्य के इतिहास के निर्मली-करण मे विशेष रुचि, ब्रजभाषा के सुकवि।

डॉ० किशोरीलाल गुप्त के ब्रजभाषा काव्य ग्रंथ

१ अमरुक शतक—विशद भूमिका, ११३ मूल श्लोक, गद्य रूपांतर ब्रजभाषा कवित्त सवैयाँ मे पद्यानुवाद ।
२६-००

२. घटखर्पर काव्य—भूमिका, २२ मूल श्लोक, गद्य रूपांतर, खड़ी बोली में पद्यानुवाद ब्रजभाषा मे सवैयाँ मे पद्यानुवाद, अग्रेजी मुक्त छन्द में अनुवाद
१०-००

३. उराहनौ—१०६ कवित सबैयो मे भ्रमरगीत सबधी खण्डकाव्य ।
१०-००

४. राधा—१०८ सवैये, एक कवित्त, सटीक-टीकाकार—स्वर्गीय विश्वनाथ लाल 'शैदा' (प्रेस में) । अत्यन्त मर्मस्पर्शी खण्ड काव्य । कुरुक्षेत्र मे राधा कृष्ण की पुनर्मिलन-कथा ।

५ सोन जुही—२५० फुटकल कवित्त सवैये, कुछ दोहो और बरवों का संकलन । (प्रेस मे)

मिलने का पता—

जयभारती प्रकाशन
लाल जी मार्केट, माया प्रेस रोड,
मुट्ठीगज, इलाहाबाद